श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

श्रीहरिलीला महिमा

श्रीमन्माध्व गौड़ेश्वराचार्य श्रीप्रभु चन्द्र गोपाल गोस्वामीजी के पौत्र श्रीब्रह्मगोपाल जी (श्रीप्रियासखी) कृता।
श्रीब्रह्मगोपाल गोस्वामी विरचित

प्रकाशक

श्रीलक्ष्मीनारायणदास
श्रीविष्णुप्रियागौरांग आश्रम
वनखण्डी महादेव के निकट
श्रीराधाकुण्ड (मथुरा)
+91 9897457066, 7895028887

प्रकाशन तिथि : अगस्त, वर्ष २०२५

NAVRANG OFFSET PRINTERS

A Complete Printing & Book Binding etc.
9975787982

TYPIST & GRAPHICS DESIGNER

Brijbhoosan Pathak 8881982106, 8630192318

श्रीराधाकुण्ड पर श्रीहरिलीला महिमा

सुधानां चान्द्रीणामपि मधुरिमोन्माद दमनी।
दधाना राधादि प्रणयधनसारैः सुभगिताम्।।
समन्तात् – सन्तापोद्गमविषमसंसारसरणी।
प्रणीतां ते तृष्णां हरतु "हरिलीला" शिखरिणी।।१।।

–श्रीरूप गोस्वामिकृत विदग्धमाधवे

भावानुवाद गर्मी में प्यास बहुत लगती है उसकी बढ़िया दवा दही से बनी शिखरिणी है। जिसमें मीठा और सुगन्धित–दोनों होते हैं। उसी शिखरिणी को रूपान्तर से श्री रूप गोस्वामीजी संसार तापों से उत्पन्ना हुई तृष्णा की उत्तम औषधि बता रहे हैं।

जब से यह जीव संसार पथ का पथिक बना तभी से पुत्र कलत्र तन धन की जलन बढ़ती ही गई इतने प्राचीन चीड़ रोग की दवा श्री हरिलीला रूप श्री खंड है। इसमें चन्द्र–किरणों की सुधाओं को वितरण करने वाली मिठास है और श्रीराधा स्वामिनी की सहचरियों के प्रणय रूप भाव ही कपूर की सुगंधि है। ऐसी श्रीहरिलीला नामक श्री खंड प्यासे पथिकों की प्यास बुझावे, इसे नित्य पीओ यही आशीर्वाद है।

ग्रन्थकर्ता का परिचय

श्रीमद्गीतगोविन्द काव्य कर्ता रसिक मुकुटमणि श्रीजयदेव कविराज गोस्वामीजी को कौन नहीं जानता? आपके ही वंश में रसिकराज श्रीब्रह्मगोपाल गोस्वामी प्रभु का प्रादुर्भाव हुआ था।

भगवान् श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुजी के साथ शेषावतार श्रीमन्नित्यानन्द प्रभुजी हुए। आपके कृपामय शिष्य परमहंस चूड़ामणि श्रीरामराय गोस्वामीजी के लघुभ्राता श्रीप्रभुचन्द्रगोपाल गोस्वामीजी श्रीचित्रासखी के अवतार हुए। आपके ही पोते (नाती) श्रीब्रह्मगोपाल गोस्वामीजी ने इस हरिलीला नामक ग्रन्थ की रचना की है।

वि० सं० १६ शताब्दी में फाल्गुन शुक्ला १३ गुरुवार को श्रीवृन्दावन में वंशीवट के निकट श्रीराधिकानाथ गोस्वामीजी की धर्मपत्नी सौभाग्यवती श्रीमूखत्त बहुजी से आपका प्रादुर्भाव हुआ। पिताजी ने स्वयं ही आपको पढ़ाया, यज्ञोपवीत कराकर श्रीगोपालमंत्रराज की दीक्षा दी और अनुष्ठान कराया।

गो० श्रीब्रह्मगोपालजी महाराज का विवाह आगरा (अग्रवन) निवासी पं० मोहनलालजी भोजेपत्रे की पुत्री श्रीरासेश्वरीजी के साथ हुआ था। विवाह के थोड़े समय पीछे ही आपके पिता श्रीराधिकानाथ प्रभु नित्यलीला में पधार गये।

कुछ वर्ष पीछे ही श्रीयमुनाजी की बाढ़ में आपका घर प्रवाहित हो गया। तब आप सपत्नीक श्वसुर गृह में आगरा में रहने लगे और यहाँ एक मकान खरीद लिया, किन्तु एक दिन श्रीवृन्दावन की भारी स्मृति हुई और आप हिचकी भरकर रोने लगे।

पं० मोहनलालजी ने यह सब हाल देखकर कहा कि चलो, श्रीवृन्दावन में दूसरी जगह ठीक करा दें। इधर-उधर बात चलाने से मालूम हुआ, कि श्रीवृन्दावन में ग्वालियर महाराज की भी जमीन है, आप श्रीब्रह्मगोपालजी को साथ लेकर ग्वालियर

पहुँचे।

जब राज दरबार में सिपाही से खबर कराई कि कोई पंडित मिलने आये हैं, तो महाराज ने सिपाही से कहा कि अभी यज्ञ में बहुत विद्वान् बुलाये थे लेकिन-कोई भी जल की वर्षा न करा सका, अब पंडितों से मिलकर क्या करें? प्रजा तो अनावृष्टि के कारण मर रही है, अगर कोई चमत्कारी हों तो बुला लाओ।

सिपाही ने सारा समाचार आपको आकर सुनाया, पं० मोहनलालजी सुनकर चुप हो गये। परन्तु श्री ब्रह्मगोपालजी ने हँसकर आज्ञा दी, कि हम एक बार मिलना चाहते हैं।

जब राजा साहब से मुलाकात हुई, तो वही प्रसंग सामने आये। श्री ब्रह्मगोपाल गोस्वामीजी ने वर्षा के लिये वचन दे दिया कि, आज रात १२ बजे वर्षा हो जायेगी। राजा ने आपको महल में ठहरा लिया रात आते ही वही वर्षा का समय आया। भक्तवत्सल भगवान् श्रीराधामाधवजी ने अपने भक्त का वाक्य सत्य करने के लिये ऐसी वर्षा की, जो चार घंटे में समस्त प्रजा के लोग आनन्द में निमग्न हो गये और श्री गो० ब्रह्मगोपाल जी महाराज का जयजयकार हुआ।

ग्वालियर नरेश ने बहुत सा द्रव्य आपको भेंट किया और आपको हाथी पर सवार कर श्रीवृन्दावन लाये। बहुत से स्थान दिखलाये। किन्तु आपने श्रीवृन्दावन के हरे वृक्ष न कटवाने पड़ें, इस कारण एक ऊजड़ जगह के लिये आज्ञा दे दी। भूपति ने वही जगह आपको भेंट कर दी और कहा कि इसमें एक स्थान बनवा दें। इस पर आपने राजा को श्रीसनातन गोस्वामीजी के भोट कम्बल की कथा सुनाकर उत्कट वैराग्य का परिचय दिया। राजा ने कहा सत्य है श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुजी के सेवक ऐसे ही होते हैं। यह कह आपकी आज्ञा ले ग्वालियर को विदा हुए।

श्रीब्रह्मगोपाल प्रभु ने श्रीवृन्दावन के समीपवर्ती ग्रामों से अपनी जाति के सारस्वत ब्राह्मणों को बुलाकर शिष्य किया,

और उनके २१ घर बसाकर उस स्थान का नाम–"श्रीराधा–माधवजी का घेरा" रख दिया। किन्तु श्रीमान् के उन ब्राह्मण सेवकों ने आपके नाम से ही उस स्थान का नाम "ब्रह्मपुरी विख्यात किया जो आज पर्यन्त विद्यमान है।

आपके वंशोद्भव श्रीमद्भागवत चन्द्रमा श्रीनन्दकिशोर गोस्वामीजी ने लिखा है–

येन "ब्रह्मपुरी" द्विजेन्द्रवसतिर्वृन्दावने स्थापिता।
द्वात्रिंशरद्गृहमध्यगश्च विदितो भट्टोपनामा क्वचित्।।
राधामाधवमन्दिरं विरचयन् श्रीराधिकानाथ यो।
गोस्वामिप्रभुवर्य एव शुशुभे श्री ब्रह्मगोपालः ।।

(१२) (बंश वैजयन्ती उत्तरार्द्ध)

अर्थात् जिन्होंने श्रीधामवृन्दावन में सारस्वत ब्राह्मणों की पुरी स्थापित की और ३२ घरों के बीच में श्रीराधामाधवजी का मन्दिर बनाया। जो कभी भट्टजी नाम से भी विख्यात हुए। वे श्रीराधिकानाथ प्रभु के पुत्र गो० श्रीब्रह्मगोपालजी महाराज परम शोभायमान हुए।

आप प्रति वर्ष वैष्णवों को साथ लेकर श्रीब्रजयात्रा चार महीने में पूरी किया करते थे, और नित्य श्रीमद्भागवत की कथा द्वारा लीला स्थलों का माहात्म्य सुनाते थे।

आपकी पद् गायन में बड़ी रुचि रहती। श्रीमद्वध्भाचार्य महाप्रभु जी के पौत्र गो० श्रीगोकुलनाथजी महाराज आपसे बहुत प्रेम करते थे। इस कारण बहुत समय श्रीगोकुल में विराजमान रहे।

आपने श्रीराधा माधव भाष्य पर "वस्तु बोधिनी" टिप्पणी लिखी है। जिसका कुछ अंश प्रकाशित हो चुका है और भी कितने ही ग्रन्थ हैं, जिनमें से यह ब्रजभाषा का एक ग्रन्थ श्रीहरिलीला आपके हाथ में है।

इसमें अष्टयाम सेवा श्रीप्रिया प्रियतमजू को अष्ट सखियों के कुंजों में क्रम से वर्णन की है जो आज तक किसी वाणी में देखने में नहीं आई।

एक समय बुन्देलखंड के छतरपुर नरेश महाराजा श्रीविश्वनाथ सिंहजी के महलों में एक मास हमारी श्रीमद्भागवत कथा हुई थी। महाराजा ने यह पुस्तक हमको भेंट में दी और भी हमारे घर के ग्रन्थ उनके यहाँ थे। किन्तु उनके देहावसान के पीछे फिर हमारा जाना नहीं हुआ।

रसिकजन एवं गौड़ीय वैष्णवों से अत्यन्त आग्रह है, कि वे ऊँचे से ऊँचे साधन में इस साध्यग्रन्थ का नित्य सेवन करें और अपने अपने मन्दिरों में इसकी पदावली से सेवा करावें।

इतना ही लिखना पर्याप्त है, कि छिपा हुआ यह अति प्राचीन ग्रन्थ रत्न आप सबको सहज ही प्राप्त हो गया है यही श्रीराधामाधव जी की अनन्य कृपा है।

अन्त में कुसुम सरोवर वाले परमहंस श्रीकृष्णदास बाबाजी महाराज को धन्यवाद है जो आजकल पुरातन ग्रन्थों के प्रकाशन में ही अपना अमूल्य समय दे रहे हैं। तथा उनके प्रयास से ही यह ग्रन्थ-रत्न प्रकाशित हो रहा है।

-लेखक
श्रीजयदेवचरणानुचर आचार्य
श्रीयमुनावध्भगोस्वामी शास्त्री
ब्रह्मपुरी (बिहारीपुरा, श्रीवृन्दावनधाम)

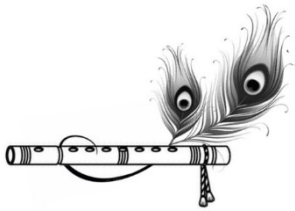

श्रीराधाकुण्ड पर हरिलीला

स्तोत्रं

यथा राधा प्रिया विष्णोः, कुण्डं प्रियं तस्या तथा।
सर्व गोपिषु सैवेका विष्णो रत्यन्त वल्लभा।।

जिसप्रकार श्रीकृष्ण की अत्यन्त प्रियकान्ता श्रीराधारानी हैं, उसीप्रकार उनका श्रीकुण्ड उन्हें अत्यन्त व सर्वाधिक प्रिय है।

श्रीराधाकुण्ड प्रकट लीला व महिमा माधुरी

द्वापर युग में श्रीकृष्ण जब श्रीगोवर्धन के समीप गौएं चरा रहे थे तो उसी समय कंस के द्वारा प्रेरित अरिष्टासुर राक्षस आया। उसने गोपाल की गायों व गोप-बालकों को ताड़ना शुरू किया, सभी कृष्ण की शरण में गये। भक्ताभयकारी श्रीकृष्ण ने उसे ललकारा और युद्ध में मार गिराया।

सखाओं ने नाच-नाचकर यह शोर मचाया कि कन्हैया ने साँढ़ के रूप में आये अरिष्ट नामक राक्षस का वध किया। यह सुनकर सखियों ने यह संवाद राधाजी को सुनाया। राधाजी ने जब यह सुना कि कृष्ण ने गोवंश का वध किया है तो रुष्ट होती हुई करूणामयी राधारानी श्यामसुन्दर से बोलीं-

"हे श्यामसुन्दर! तुमने गोपाल होकर गोवंश का वध किया; अतः तुम हम पवित्र रूपिणी गोपियों को स्पर्श मत करना।" श्रीकृष्ण ने कहा- "हे राधे! मैंने साँढ़ के रूप में आये राक्षस का वध किया; अन्यथा वह सभी ब्रजवासियों की क्षति करता।" फिर भी उसको मारने का यदि प्रायश्चित हो तो उसे मुझे बतायें। श्रीराधिका ने कहा- "हे श्याम! तुम संसार के सभी तीर्थों में स्नान करके पवित्र हो आओ।"

श्यामसुन्दर ने कहा- "हे राधिके! यह वृन्दावन मुझे अत्यन्त प्यारा है। इसे न छोड़ने का मेरा संकल्प भी है। अतः

तुम्हारी भी प्रसन्नता के मैं समस्त संसार के तीर्थों को यहाँ बुलाऊँगा।" ऐसा कहते हुए श्यामसुन्दर ने समस्त तीर्थों का आह्वान किया। सभी तीर्थ आकर जलरूप में विराजमान हो गये जहाँ श्यामसुन्दर ने अपने श्रीचरण की एड़ी से पृथ्वी पर आघात किया था वहाँ जल रूप में विराजमान हो गये। श्यामसुन्दर ने उसमें गर्वान्वित होकर स्नान करके कहा–

"हे राधे! अब मैं पवित्र हो गया। प्रिये! मैं जिस प्रकार अपने भक्तों के पाप शीघ्र हरण करता हूँ, उसी प्रकार यह मेरा कुण्ड स्नानमात्र से शीघ्र पाप हरण करेगा।"

"हे राधे! तुमने जगत के लिये क्या किया?" यह सुनकर सखियाँ बोलीं– हे श्याम! हम भी तुम्हारे कुण्ड के समीप एक ऐसा मनोहर कुण्ड बनायेंगी जो तुम्हारे कुण्ड को भी आकृष्ट करेगा।" तब राधाजी ने कंगन से ब्रजरज को हटाया। सखियों ने उसे बढ़ा किया। श्रीराधाजी द्वारा बनाये कुण्ड को राधाजी के समान गुणों वाला देखकर श्यामसुन्दर ने कहा–

"हे राधे! जिस प्रकार तुम मुझे समस्त सखियों में सर्वाधिक प्रिय हो उसी प्रकार तुम्हारा कुण्ड भी मुझे अति प्रिय होगा।" यह सुनकर श्रीराधिका भी प्रसन्न होती हुई बोली– हे श्याम! मैं भी अपनी सखियों सहित तुम्हारे इस कुण्ड में आऊँगी, जहाँ तुमने अरिष्ट का मान मर्दन किया। आज के बाद जो भी तुम्हारे कुण्ड के तट की सफाई करेंगे, उनके शत–शत कल्मष नाश होंगे।

उस दिन अष्टमी तिथि व पुष्या नक्षत्र था और लीला करते–करते रात्रि के बारह बज गये थे। तब से हर वर्ष इसी तिथि पर रात्रि को बारह बजे स्नान होता है। स्नानमात्र से ही श्रीराधिका संतान प्राप्ति के लिये आये जोड़ों को भक्ति सम्पन्न संतान दान करती हैं एवं भक्तिप्राप्ति के इच्छुक वैष्णवजनों को श्यामसुन्दर ज्ञान, वैराग्य एवं भक्ति का दान करके उनका संसार बंधन से मोचन करके निज नित्य लीला में प्रवेश करा देते हैं। जहाँ युगलराज का चिर संग प्राप्त करके एवं उनकी

प्रेममयी सेवा करते हुये अपने जीवन को धन्य कर लेता है।

श्रीराधाकुण्ड स्नान मन्त्र:

राधिकासम-सौभाग्यं! सर्वतीर्थ-प्रवन्दितं!
प्रसीद राधिकाकुण्ड! स्नामि ते सलिले शुभे।।

श्रीराधिका के समान सौभाग्य वाले कृष्णप्रिय श्रीराधा-कुण्ड मैं आपके पावन जल में श्रद्धापूर्वक स्नान कर रहा हूँ, आप मुझ पर प्रसन्न हों।

श्रीश्यामकुण्ड स्नान मन्त्र:

उद्भूतं कृष्ण-पादाब्जादरिष्ट-वधतश्छलात्।
पाहि मां पामरं स्नामि श्यामकुण्ड! जले तव।।

श्रीराधाकुण्ड प्रणाम मन्त्र:

श्रीवृन्दाविपिनं सुरम्यमपि तच्छ्रीमान् स गोवर्धनः,
सा रासस्थलिकाप्यलं रसमयैः किन्तावदन्यस्थलैः।
यस्याप्यंशलवेन नार्हति मनाक् साम्यं मुकुन्दस्य तत्,
प्राणेभ्योऽप्यधिकं प्रियेव दयितं तत्कुण्डमेवाश्रये।।

श्रीश्यामकुण्ड प्रणाम मन्त्र:

दुष्टारिष्टवधे स्वयं समभवत् कृष्णांघ्रिपद्मादिदं,
स्फीतं यन्मकरन्द-विस्तृतिरिवारिष्टाख्यमिष्टं सरः।
सोपानैः परिरञ्जितं प्रियतया श्रीराधया कारितैः,
प्रेमालिंगदिव प्रियासर इदं तन्नित्यनित्यं भजे।।

श्रीराधाकृपाकटाक्ष स्तवराज

मुनीन्द्र वृन्द वन्दिते, त्रिलोक शोक हारिणि,
प्रसन्न वक्त्र पंकजे, निकुञ्ज भू विलासिनि।
ब्रजेन्द्र भानु नन्दिनी, ब्रजेन्द्र सूनु संगते,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम्।।१।।

अशोक वृक्ष वल्लरी, वितान मंडप स्थिते,
प्रवाल जाल पल्लव, प्रभारुणांघ्रि कोमले।

वराभय स्फुरत् करे, प्रभूत सम्पदालये,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ।।२ ।।

अनंग रंग मंगल, प्रसंग भंगुरभ्रुवां,
सुविभ्रमै ससम्भ्रमै, दृगन्त बाण पातनैः ।
निरन्तरं वशीकृत, प्रतीत नन्दनन्दने,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ।।३ ।।

तडित् सुवर्ण चम्पक, प्रदीप्त गौर विग्रहे,
मुख प्रभा परास्त, कोटि शारदेन्दु मण्डले ।
विचित्र चित्र संचरच्, चकोर शाव लोचने,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ।।४ ।।

मदोन्मदातियौवने, प्रमोद मान मण्डिते,
प्रियानुराग रञ्जिते, कला विलास पण्डिते ।
अनन्य धन्य कुञ्जराज, काम केलि कोविदे,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ।।५ ।।

अशेष हाव भाव धीर, हीर हार भूषिते,
प्रभूत शातकुम्भ कुम्भ, कुम्भि कुम्भ सुस्तनि ।
प्रशस्त मन्द हास्य चूर्ण, पूर्ण सौख्य सागरे,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ।।६ ।।

मृणाल वाल वल्लरी, तरंग रंग दोर्लते,
लताग्र लास्य लोल नील, लोचनावलोकने ।
ललल् लुलन् मिलन मनोज्ञ, मुग्ध मोहनाश्रये,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ।।७ ।।

सुवर्ण मालिकाञ्चिते, त्रिरेख कम्बु कण्ठगे,
त्रिसूत मंगलीगुण, त्रिरत्न दीप्ति दीधिते ।
सलोल नील कुन्तले, प्रसून गुच्छ गुम्फिते,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम् ।।८ ।।

नितम्ब बिम्ब लम्बमान, पुष्प मेखला गुणे,
प्रशस्त रत्न किंकिणी, कलाप मध्य मंजुले ।

करीन्द्रशुण्ड दण्डिका, वरोह सौभगोरुके,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम्।।९।।

अनेक मन्त्रनाद मंजु, नूपुरा रवस्खलत्,
समाज राजहंस वंश, निक्वणातिगौरवे।
विलोल हेम वल्लरी, विडम्बि चारु चंक्रमे,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम्।।१०।।

अनन्त कोटि विष्णुलोक, नम्र पद्म जार्चिते,
हिमाद्रिजा पुलोमजा, विरिञ्चजा वरप्रदे।
अपार सिद्धि वृद्धि दिग्ध, सत्पदांगुली नखे,
कदा करिष्यसीह मां, कृपाकटाक्षभाजनम्।।११।।

मखेश्वरि क्रियेश्वरि, स्वधेश्वरि सुरेश्वरि,
त्रिवेद भारतीश्वरि, प्रमाण शासनेश्वरि।
रमेश्वरि क्षमेश्वरि, प्रमोद काननेश्वरि,
ब्रजेश्वरि ब्रजाधिपे, श्रीराधिके नमोऽस्तुते।।१२।।

इतीदमद्भुतं स्तवं निशम्य भानुनन्दिनी,
करोतु संततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम्।
भवेत्तदैव संचित त्रिरूप कर्म नाशनं,
लभेत्तदा ब्रजेन्द्र सूनु मण्डल प्रवेशनम्।।१३।।

श्रीराधिका ध्यानम्

श्यामां गोरोचनाभां स्फुरदसितपटप्राप्तिरम्यावगुण्ठां,
रम्यां धन्यां स्ववेणीसुचिकुरनिकरालंबपादांकिशोरीम्।
तर्जन्यगुष्ठयुक्तं हरिमुखकुहरे युञ्जतीं नागवल्ली-
पर्णं कर्णायताक्षीं त्रिभुवनमधुरां राधिकां भावयामि।।

श्रीकृष्णप्रेम के अनुकूल समस्त दिव्य सुगन्धित अंगों वाली व तप्त काञ्चन वर्णों, नीलाम्बरा मधुर भंगी में घूँघट लगाये हुए सुन्दर केशों से श्रृंगारित वेणु निज सुन्दर पतली तर्जनी व अंगुष्ठ के द्वारा प्रियतम को ताम्बूल अर्पण करती हुई, जिनके सुन्दर नयनारविन्द आकर्ण विस्तृत हैं। त्रिभुवन

में सर्वाधिक कृष्णप्रिया श्रीराधिकाजी के श्रीचरणकमलों की हम शरण लेते हैं।

वे श्यामसुन्दर जो मस्तक पर मयूर पुच्छ व हस्तकमल में वेणु धारण कर नाना विनोदमयी राधिका नाम ही धुनि बजाते हैं। पीताम्बरधारी पद्मलोचन का हम नमन करते हैं। वे गोपीवल्लभ राधारमण मन्द-मन्द मुस्कराते हुए प्राणन प्यारे ब्रजवासियों का मन हरण कर रहे हैं। भजन करने वालों के समस्त दोषों को क्षमा करके जीवन को आनन्दमय करने वाले हैं। प्रेममयी गोपियों के हृदय को चुराने के साथ वे उनके माखन, मिश्री को चोरी कर बड़ा आनन्द दान करते हैं।

हे रसिक नागर श्यामसुन्दर! कृपया ऐसी कृपा करें कि अपकी सुमधुर मधुमयी लीलाओं का हम विष्णुप्रिया गौरांग के अनुगत होकर प्रचार कर सकें।

।।इति ऊर्ध्वाम्तायतंत्रे शिवगौरीसंवादे श्रीराधाकृपाकटाक्षस्तवराजः संपूर्णम्।।

श्रीकृष्णकृपाकटाक्ष स्तवराज

भजे ब्रजैकमण्डनं समस्त पापखण्डनं,
स्वभक्तचित्त रञ्जनं सदैव नन्दनन्दनम्।
सुपिच्छगुच्छ मस्तकं सुनादवेणु हस्तकं,
अनंगरंग सागरं नमामि कृष्णनागरम्।।१।।

मनोज गर्व मोचनं विशाल लोललोचनं,
सुपीतवस्त्र शोभनं नमामि पद्मलोचनम्।
करारविन्दभूषणं स्मितावलोकसुन्दरं,
महेन्द्रमानदारणं स्मरामि कृष्णबालकम्।।२।।

कदम्बसूनुकुण्डलं सुचारु गण्डमण्डलं,
ब्रजांगनैक वल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम्।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया,
ऊलुखले सुदुस्सहं नमामि नन्दनन्दनम्।।३।।

नवीनगोपनागरं नवीनकेलि लम्पटं,

नवीनमेघसुन्दरं भजेब्रजैक मन्दिरम्।
सदैव पादपंकजं मदीयमानसेनिजं,
स्मरामि नन्दबालकं समस्त भक्तपालनम्।।४।।

समस्त गोपनागरं दृगम्बुनैकमोहनं,
नमामि कुञ्जमध्यगं प्रसन्न भानुशोभनम्।
दृगन्तकान्त रञ्जनं सदा सदालि संगिनं,
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम्।।५।।

गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं शुभाकरं,
त्वया सुख प्रदायकं नमामि प्रेमनायकम्।
समस्त दोषशोषणं समस्त भक्त तोषणं,
समस्त दास मानसं नमामि नन्दलालसम्।।६।।

दृगन्तचारुशायकं नमामि प्रेमनायकं,
निकामकामदायकं नमामि वेणुगायकम्।
महाभवाग्नितारकं भवाब्धि कर्णधारकं,
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम्।।७।।

समस्त मुग्ध गोपिका मनोजकामदायकं,
नमामि भक्तवर्धनं दधिप्रियं जनार्द्दनम्।
किशोरकान्तिरञ्जनं दृगञ्जनं सुशोभितं,
गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम्।।८।।

निकुञ्जमञ्जुमाधुरी प्रियालिवृन्दसुन्दरीं,
येन सदैव गीयतां तथाकृपा विधीयताम्।
प्रमाणितं स्तवद्वयं पठन्ति प्रातरुत्थिताः,
त एव नन्दनन्दनं मिलन्ति भावसंस्थिताः।।९।।

।।इति यामलोक्त श्रीश्रीकृष्णकृपाकटाक्ष स्तोत्रं संपूर्णम्।।

श्रीललिताकुण्डाष्टकम्

(श्रीरूपगोस्वामी कृत)

राधामुकुन्द-पदसम्भवधर्मबिन्दु-
निर्मञ्छनोपकरणीकृत-देहलक्षाम् ।
उत्तुंगसौहृदविशेषवशात् प्रगल्भाम्,
देवीं गुणैः सुललितां ललितां नमामि ।।१।।

राका-सुधा-किरण-मण्डल-कान्ति-दण्डि-
वक्त्रश्रियं चकित-चारु चमूरुनेत्राम् ।
राधाप्रसाधनविधान-कलाप्रसिद्धां,
देवीं गुणैः सुललितां ललितां नमामि ।।२।।

लास्योल्लसद्भुजग-शत्रुपतत्रचित्र-
पट्टांशुकाभरण-कञ्चुलिकाञ्चितांगीम् ।
गोरोचनारुचि-विगर्हण-गौरिमाणं,
देवीं गुणैः सुललितां ललितां नमामि ।।३।।

धूर्ते ब्रजेन्द्रतनये तनुसुष्ठुवाम्य,
मा दक्षिणा भव कलंकिनि लाघवाय ।
राधे गिरं शृणु हितामिति शिक्षयन्तीं,
देवीं गुणैः सुललितां ललितां नमामि ।।४।।

राधामभिव्रजपतेः कृतमात्मजेन,
कूटं मनागपि विलोक्य विलोहिताक्षीम् ।
वाग्भंगिभिस्तमचिरेण विलज्जयन्तीम्,
देवीं गुणैः सुललितां ललितां नमामि ।।५।।

वात्सल्य-वृन्दवसतिं पशुपालराज्ञयाः,
सख्यानुशिक्षणकलासु गुरु सखीनाम् ।
राधाबलावरज-जीवितनिर्विशेषा,
देवीं गुणैः सुललितां ललितां नमामि ।।६।।

यां कामपि ब्रजकुले वृषभानुजायाः,
प्रेक्ष्य स्वपक्ष-पदवीमनुरुंध्यमानाम् ।
सद्यस्तछिष्ट-घटनेन कृतार्थद्वितीं,

देवीं गुणैः सुललितां ललितां नमामि।।७।।

राधा-ब्रजेन्द्रसुत-संगम-रंगचर्यां,
वर्यां विनिश्चितवतीमखिलोत्सवेभ्यः।
तां गोकुलप्रियसखी-निकुरुम्बमुख्यां,
देवीं गुणैः सुललितां ललितां नमामि।।८।।

अहो! युगलराज श्रीश्रीराधामुकुन्द के निकुञ्जों, कुण्ड तट पर विहार करते समय यदि कदाचित् उनके श्रीचरणकमलों में पसीने की बूँद दिख जाये, तो लाख-लाख देह धारण कर श्रीललिताजी उसका निर्मञ्छन प्राणों से प्रेमपूर्वक सुख विधान करती हैं, उन्हें हम दैवीय सुललित गुणों वाली श्रीललिताजी को हम नमन करते हैं।

जिनके श्रीमुखकमल की शोभा पूर्णचन्द्र मण्डल को भी तिरस्कृत कर रही है। चकित मृगी के नयनों के समान ही जिनके नयनद्वय अतिशय चंचल श्रीराधिका का श्रृंगार करने की सेवा में अर्थात् वेषादि रचना में अतिशय प्रसिद्धि को प्राप्त हैं। उन श्रीललिताजी को हम नमन करते हैं।

उद्दत नृत्य में अतिशय उल्लसित मयूर के पुछ के समान (कृष्ण के मयूर चूढ़ा पर ध्यान हेतु) वस्त्र धारण करती हैं। सखियों को भी युगल राज की प्रेम सेवाओं की शिक्षा के कारण गुरु स्वरूपा हैं। श्रीश्रीराधाकृष्ण जिनके जीवन स्वरूप हैं। निखिल गुण सिन्धु श्रीललिता की हम जगतवासी कोटि-कोटि वन्दना करते हैं; क्योंकि इस घोर कलिकाल में भी वे राधाकृष्ण रूपी महाप्रभु के परिकर स्वरूप दामोदर के रूप में प्रकट हुई हैं।

वृषभदनुजनाशान्नर्मधर्मोक्तिरंगैर्निखिल,
निजसखीभिर्यत् स्वहस्तेन पूर्णम्।
प्रकटितमपि वृन्दारण्यराज्ञ्या प्रमोदै–
स्तदतिसुरभि राधाकुण्डमेवाश्रयो मे।।१।।

ब्रजभुवि मुरशत्रोः प्रेयसीनां निकामै–
रसुलभमपि तूर्णं प्रेमकल्पद्रुमं तम्।
जनयति हृदि भूमौ स्नातुरुच्चैः प्रियं,
यत्तदतिसुरभि राधाकुण्डमेवाश्रयो मे।।२।।

अघरिपुरपि यत्नादत्र देव्याः प्रसाद–
प्रसरकृतकटाक्षप्राप्तिकामः प्रकामम्।
अनुसरति यदुच्चैःस्नानसेवानुबन्धै–
स्तदतिसुरभि राधाकुण्डमेवाश्रयो मे।।३।।

ब्रजभुवनसुधांशोः प्रेमभूमिर्निकामं,
ब्रजमधुरकिशोरीमौलिरत्नप्रियेव।
परिचितमपि नाम्ना यच्च तेनैव तस्या–
स्तदतिसुरभि राधाकुण्डमेवाश्रयो मे।।४।।

अपि जन इह कश्चिद् यस्य सेवाप्रसादैः,
प्रणयसुरलता स्यात्तस्य गोष्ठेन्द्रसूनोः।
सपदि किल मदीशा–दास्यपुष्पप्रशस्या,
तदतिसुरभि राधाकुण्डमेवाश्रयो मे।।५।।

तटमधुरनिकुञ्जाः क्लृप्तनामान उच्चै–
र्निजपरिजनवर्गैः संविभज्याश्रितास्तैः।
मधुकर रुतरम्या यस्य राजन्ति काम्या–
स्तदतिसुरभि राधाकुण्डमेवाश्रयो मे।।६।।

तटभुवि वरवेद्यां यस्य नर्मातिहृद्यां,
मधुरमधुरवार्तां गोष्ठचन्द्रस्य भंग्या।
प्रथयति मिथ ईशा प्राणसख्यालिभिः सा,
तदतिसुरभि राधाकुण्डमेवाश्रयो मे।।७।।

अनुदिनमतिरंगैः प्रेममत्तालिसंघै-
वरसरसिजगन्धैर्हारिवारिप्रपूर्णे।
विहरत इह यस्मिन् दम्पती तौ प्रेमत्तौ,
तदतिसुरभि राधाकुण्डमेवाश्रयो मे।।८।।

अविकलमति देव्याश्चारु कुण्डाष्टकं यः,
परिपठति तदीयोल्लासिदास्यार्पितात्मा।
अचिरमिह शरीरे दर्शयत्येव तस्मै,
मधुरिपुरतिमोदैः श्लिष्यमाणां प्रियां ताम्।।९।।

।। इति श्रीमद्रघुनाथदासगोस्वामिविरचित-स्तवावल्यां श्रीराधाकुण्डाष्टकं संपूर्णम्।।

श्रीकृष्णाकुण्डाष्टकम्

किं तपश्चचार तीर्थलक्षमक्षयं पुरा,
सुप्रसीदति स्म कृष्ण एव सद्वरं यतः।
यत्र वासमाप साधु तत् समस्त-दुर्लभे,
तत्र कृष्णकुण्ड एव संस्थितिः स्तुतास्तु नः।।१।।

यद्यरिष्टदानवोऽपि दानदो महानिधे-
रस्मदादि-दुर्मतिभ्य इत्यहोवसीयते।
यो मृतिच्छलेन यत्र मुक्तिमद्भुतां व्यधात्,
तत्र कृष्णकुण्ड एव संस्थितिः स्तुतास्तु नः।।२।।

गोवधस्य निष्कृतिस्त्रिलोकतीर्थ-कोटिभी-
राधयेत्यवादि तेन ता हरिः समाह्वयत्।
यत्र पार्ष्णिघातजे ममज्ज च स्वयं मुदा,
तत्र कृष्णकुण्ड एव संस्थितिः स्तुतास्तु नः।।३।।

क्वापि पापनाश एव कर्मबन्ध-बन्धनाद्,
ब्रह्मसौख्यमेव विष्णुलोकवासिता क्वचित्।
प्रेमरत्नमत्ययत्नमेव यत्र लभ्यते,
तत्र कृष्णकुण्ड एव संस्थितिः स्तुतास्तु नः।।४।।

फुल्ल-माधवी-रसाल-नीपकुञ्जमण्डले,
भृंगकोककोकिलादि-काकली यदंचति।
आष्टयामिकावितर्क-कोटिभेद-सौरभं,
तत्र कृष्णकुण्ड एव संस्थितिः स्तुतास्तु नः।।५।।

दोल-केलि-चित्ररास-नृत्यगीतिवादनै-
र्निह्नव-प्रसूनयुद्ध-सीधुपान-कौतुकैः।
यत्र खेलतः किशोरशेखरौ सहालिभि-
स्तत्र कृष्णकुण्ड एव संस्थितिः स्तुतास्तु नः।।६।।

दिव्यरत्ननिर्मितावतार-सारसौष्ठवै-
श्छत्रिका विराजि चारु कुट्टिम-प्रभाभरैः।
सर्वलोक-लोचनातिधन्यता यतो भवेत्,
तत्र कृष्णकुण्ड एव संस्थितिः स्तुतास्तु नः।।७।।

माथुरं विकुण्ठतोऽपि जन्मधाम दुर्लभं,
वासकाननन्ततोऽपि पाणिना धृतो गिरिः।
श्रीहरेस्ततोऽपि यत्परं सरोऽतिपावनं,
तत्र कृष्णकुण्ड एव संस्थितिः स्तुतास्तु नः।।८।।

कृष्णकुण्डतीरवास-साधकं पठेदिदं,
योऽष्टकं धियं निमज्य केलिकुञ्जराजितोः।
राधिका-गिरीन्द्रधारिणोः पदाम्बुजेषु स,
प्रेमदास्यमेव शीघ्रमाप्नुयादनामयम्।।९।।

।। इति श्रीमद्विश्वनाथचक्रवर्तिठक्कुरविरचितं श्रीकृष्णकुण्डाष्टकं संपूर्णम्।।

स्तोत्र

श्रीराधां माधवप्राणां राधाप्राणं सुमाधवम्।
निकुञ्जस्थं सखीवृन्दप्रेयसं नित्यमाश्रये।।१।।

लालित्य लालितां लीला ललितां ललितालकाम्।
प्रीतिशाखां विशाखां वै वन्दे कुंजरसोत्सुकाम्।।२।।

चित्राम्बरां चित्रितांगीं विचित्रोच्चारचारुभाम् ।
वन्दे चामीकरोद्भासां श्रीचित्रां चन्द्रदीपिनीम्।।३।।

चमत्कारचलच्चारुचरणद्वय – राजिताम्।
श्री चम्पकलतां नौमि चम्पकोद्भासशोभिताम्।।४।।

स्रक्कणच्चरणयुग्मेन – कुंजकौतूहलप्रदाम्।
रासरंगरसोन्मत्तां रंगदेवीं नमाम्यहम्।।५।।

सौभाग्यभाविलासैः श्री प्रियावेशैः स्वलंकृताम्।
वन्दे श्रीकृष्णकेलिस्थां सुदेवीं नौनिभां मुदा।।६।।

तुंगविद्यामिन्दुलेखां – विलक्षणरसोत्सुकाम्।
नौमि मुख्याष्टकास्वाद्यरासरंगरसामृतम्।।७।।

प्रेमावतारं श्रीगौरं महाप्रभुपदाख्चतम्।
श्रीनित्यानन्दसोत्कठं रामानन्दसुपूजितम्।।८।।

श्रीरामरघुभट्ट – श्रीरूपाद्वैतसनातनम्।
जीवचन्द्रमधुश्यामलोकादीन् नौमि सर्वदा।।९।।

गोस्वामिचन्द्रगोपालं प्रभु चित्रास्वरूपिणम्।
श्यामासखीस्वरूपं श्रीराधागोपालमाश्रये।।१०।।

जयदेवं समारभ्य रसिकान्तान्महोदयान्।
चन्द्रावल्यादिकान् नौमि परमाचार्यरूपकान्।।११।।

।। इति श्रीपरमाचार्य स्तोत्रं समाप्तम्।।

दोहा

जै माधो मन मोहिनी राधा प्राणाधार।
जै राधा रस वस भये माधव प्रेम अपार।।१।।

हे जीवों! श्रीराधिका के प्राण माधव एवं माधव की प्राण प्यारी श्रीराधिका वृन्दावन के निकुञ्जों में हास्य विनोद नृत्य गीत आमोद प्रमोद कर रहे हैं। तू कब दासी रूप में पंखा झुलाते हुये उनकी रसमयी कथायें सुनेगा।

पद

जै जै माधो मन मोहिनी श्रीराधिके।
जै जै रस सिन्धु सुधा रस अगाधिके।।
रसिक विहारी जू के वेश केश आधिके।
रंग अंग अंग की उमंग सुख साधिके।।
वल्लभा लड़ेती लाल विप्रलम्भ वाधिके।
श्री प्रियासखी प्राण धन जीवन आल्हादिके।।१।।

दोहा

विहरत कुंज कुटीर दोऊश्री जमुना रस तीर।
नित्य विहार गभीर गति सुरति जुद्ध बलवीर।।२।।

हे मेरे मन! तू तो यमुना पुलिन व श्रीराधाकुण्ड के तट पर चल जहाँ युगल किशोर नित्य विहार कर रहे हैं।

पद

कुमरि दोऊ विहरत कुंज कुटीर।
प्रेम पुलकि रसवस मद माते सुरति जुद्ध बलवीर।।
जथा समय सुन्दर वर प्यारे सुमना जमुना तीर।
नित्य नवीन विहार निरन्तर पिय-प्यारी गंभीर।।
श्रीप्रियासखी विहारि विहारिन वदन विलोकि अधीर।।

हे श्री यमुनाजी! कब मैं वृन्दावन आकर आपके तट पर राधारस बिहारी के साथ वृन्दावन विहारिणी के दर्शन कर जीवन सफल बनाऊंगी?

दोहा

रसिक रसीले लाड़िली लाल छवीले नैन।
अधर सुधारस पान मद गरवीले पिक वैन।।

पद

रसिक रसीले श्री लाड़िली लाल।
छैल छवीले गुन गरवीले भावत पटु पिक वैन रसाल।।
रंग रंगीले अति चटकीले पीवत अधर सुधारस पाल।
मदन मत्त मद मुदित न जानत वीतत कित शर्वरि अनुकाल।।
श्रीप्रियासखी हिय चाव चौगुनौ छिन छिन होत विशुद्ध विशाल।।३।।

हे मन 'जहां रहो' सदासर्वदा श्रीराधा चरण रेणु का स्मरण करो, जिससे ब्रज भाव और ब्रज आगमन का पथ प्रशस्त होना है। ब्रज में आकर श्री गिरिराज गोवर्धन और श्रीराधाकुण्ड की सोहनी सेवा करनी है। जिससे सर्वाभीष्ट कारी निशान्त कालीन की हेमाम्बुज कुंज में सेवा मिलती है। जहां युगलराज राधामाधव शयन करते हैं।।३।।

दोहा

श्रीराधा माधव रंगे सुरति रंग रस लीन।
प्यारी पिय के प्रेमवश पिय प्यारी आधीन।।

पद

करत विहार श्रीराधा माधव रस रंगे।
प्यारी पिय प्रेम पिय प्यारी वश उमंगे।।
सुरति रस सिन्धु विधु तर तम तरंगे।
भीजत आधीन मीन मोहन मन मतंगे।।
बढ़त अनुराग जागि जागि अंगे अंगे।
श्रीप्रियासखी हिय हुलास बढ़त विवि अभंगे।।४।।

श्रीराधाकुण्ड अनन्त सुगन्धिपूर्ण, श्वेत, पीत, अरुण और शुक्ल रुचिर कुसुमों से सुशोभित, प्रेममय जलरुप मकरन्द प्रवाह से युक्त फलवन, फुलवन रम्भावन के मध्य इस कृष्ण प्रिय श्री राधाकुण्ड का ध्यान करो।।४।।

दोहा

रस रसाल रस माधुरी सहज रसीले लाल।
प्रीति वेलि प्यारी परम प्रियतम प्रेम तमाल।।

पद

जुगल वर सहज रसीले लाल।
मधुर माधुरी पीतम प्रेमी रसिक रसील रसाल।।
ललिता कुंड ललित लीलाधर ललित लड़ीली वाल।
लिपटी प्रीति वेलि पुलकित अति सुन्दरि प्रेम तमाल।।
वीती सकल सर्बरी प्यारी मुख अम्बुज धरि जाल।
चौंप चौगुनी बढ़त परस्पर-सुमशर कोटि विहाल।।
प्यारी प्रीतम कंठ मालिका पीतम प्यारी माल।
श्रीप्रिया सखी लखि ललिता सहचरि निज रस कुंज निहाल।।५।।

हे मन! तू राधिका कृपा पाने के लिये ललिता कुंड तट पर बैठकर, मध्यान्ह काल में श्री श्री राधामाधव के ललितानन्दद कुंज में आगमन पर ललिता जी द्वारा उनको मिष्ठान्न पवाने और उन सबका अधरामृत पाने की आशा में जीवन बिता। अहो! श्रीश्री राधामाधव के प्रेम कलाओं की शिक्षा गुरु स्वरुपा श्रीललिता सखि के श्री अंगों की ज्योति विद्युत के समान एवं मयुर पुच्छ धारी श्याम के प्रेम में रंगकर सदा मयूर पुच्छ के रंग जैसी साड़ी पहनती हैं। हे मन! राधाकुण्ड की दर्शनाभिलाषा यदि हो तो, श्रीललिता के पावन रुप का ध्यान कर और-

"ललिता विशाखा कहो, आओ राधाकुण्ड धाम
शीघ्र ही मिल जायेंगें तोहें श्यामा श्याम"।।५।।
अमृत सम ताम्बूल बनाती है ललिता प्यारी।
मैं बनूं दासी तिहारी, मैं बनूं दासी प्यारी।।

दोहा

श्रीराधा रस मोहिनी मोहे मोहनलाल।
पीवत तृपित न होत हैं प्रिया सखी प्रतिपाल।।६।।

पद

श्रीराधा रस मोहिनी।
मोहे मोहनलाल सुधा सुख सोहिनी।।
पीवत तृपित न होत अधर पीयूष विहारी।
मधुर मधुर माधुर्य माधुरी मोद महारी।।
मगन मदन मद मुदिर चंचला चंचल प्यारी।
गुन गभीर मति धीर-हीर हारावलि न्यारी।।
कुंज पुंज अलिगुंज विनय करि भाग सुहागी।
श्रीप्रियासखी जो लखी कुंज में जोरी अति अनुरागी।।६।।

दोहा

नित्य केलि नव कुंज में मंजु गुंज अलि पुंज।
निज निज मन चीते दोऊ करत प्रेम परिषुंज।।७।।

पद

करत विवि नित्य केलि नव कुंज।
प्यारी पिय मुख कमल जु अचवत पिय प्यारी मुख कुंज।।
पी पी मधुर मधुर अधरामृत नहि अघात मुद मंज।
रंजित वदन मदन मद मोदक जुगल गंड रस पुंज।।
लै लै मुदित परस्पर भावन भाव भरे गत गुंज।
श्रीप्रियासखी किलोल सलौने करत प्रेम परिषुंज।।७।।

श्रीराधिका हैं कृष्ण प्रेममयी और प्रेम रस के आस्वादक श्रीनवल किशोर श्रीश्यामसुन्दर राधा हृदयानुराग का मधुर भाव से पान करते हैं।।७।।

दोहा

भाग बड़े ललिता अली पावत नवल प्रसाद।
सुरति रँग में रँग रहे लाड़ लड़े रति साद।।८।।

पद

रँगे विवि लाड़ लड़े रति राग।
तनक न तृपित होत रस लोभी अप अपने अनुराग।।
सुरति समर में विजय लाभ की अभिलाषा हिय जाग।।

नवल वाल लालन लै घूंघट रूप अधर रस पाग।
श्रीप्रिया सखी आजु बड़ सोहत श्रीललिता अलि भाग।।८।।

रसिक शेखर का रासेश्वरी राधिका सह विविध रति राग का दर्शन ललिताजी के अनुगत में संभव है। अतः हे मेरे मन! तू ललिता कुण्ड पर ललिता सखी की कृपा को पाकर ध न्य हो।।८।।

दोहा

श्रीराधा माधव मुदित क्षुधित न तृपित प्रयंक।
अप अपनी इच्छा सहित खेलत भरि भरि अंक।।

पद

प्रिया प्रिय पौढि रहे पर्यंक।
प्रेम विवश खेले निश सारी भरि भरि निजु निजु अंक।।
परिरम्भन चुम्बन आलिंगन करत सहज निःशंक।
कबहु भृकुटि धनु मन मृग बेधत वान विलोकन वंक।।
लूटे सब विधि सुरत रीति सुख प्रिया सखी रँग अंक।।९।।
हे मन! तुम श्रीराधिका के कोटि चन्द्र सुशीतल पाद पद्म का स्मरण कर जिससे तुम्हें दासी पद प्राप्त होकर हेमाम्बुज कुंज की युगल राज की शयन शोभा का दर्शन होगा।।९।।

दोहा

ललित लड़ीले लाड़िले लाल लाड़िली वाल।
उठे उनीदे वहु विहरि आनन्द रूप रसाल।।

ललिताजी के लाड़ले युगल किशोर रत्नपलंग से उठे हैं, हे मन! तू कृष्णचैतन्य महाप्रभु के श्रीचरणकमलन की शरण गहन करके राधाजी की सखी मञ्जरी भाव प्राप्त करके शीघ्र सेवा करके जीवन धन्य कर।

पद

सेज सौं उठे लाड़िले लाल।
भोर किशोर किशोरी जोरी आनन्द रूप अनूप रसाल।
सुनि सहचरी वचन मुसिक्याये वदनाम्बुज श्रमकन के जाल।
अलकावलि मानौं अलि वलि चलि होतहिये ये जु निहाल।।
श्रीप्रियासखी सकल ललना मिल विनय करत जो वनत सुहाल।।१०।।

"रत्नजटित स्वर्णमय पलंग से किशोर-किशोरी का जागना और प्रिया सखी मंजरी का उनके श्रीमुखकमल धुलाकर पोंछना।"

दोहा

रसिक किशोरी नागरी नागर रसिक किशोर।
जीवनि धन श्रीप्रियासखी सहचरि जन चितचोर।।

पद

जै श्री राधा रसिक किशोरी, रसिक रसायन कृष्ण किशोर।
जै श्री राधा सुवरण गोरी, नील सघन घन कृष्ण सुगोर।।
जै श्री राधा दिव्य दुती अति, देव दिव्य दुति देव वरेश।
जै श्री राधा कोटि सूर्य छवि अगनित रवि छवि कृष्ण सुरेश।।
जै श्री राधा हेमलता तति, कृष्ण छवीलौ तरुण तमाल।
जै श्री राधा करुणा रसमति, अति करुणा कर कृष्ण कृपाल।।
जै श्री राधा रास रसीली, रास रसीलौ कृष्ण रसाल।
जै श्री राधा लाड़ लड़ीली, लाड़, लड़ीलौ कृष्ण विशाल।।
जै श्री राधा मदन मंजरी, मदन मनोहर मोहनलाल।
जै श्री राधा सहज सुन्दरी, सुन्दर सहज कृष्ण प्रतिपाल।।
जै श्री राधा छटा छवीली, छटा छवीलौ छाजतिलाल।
जै श्री राधा चित चटकीली, चटकीलौ चित कृष्ण दयाल।।
जै श्री राधा सुधा सागरी, अमृत सागर शोभा श्याम।
जै श्री राधा कुंज नागरी, कृष्ण कुंज नागर अभिराम।।
जै श्री राधा नवल भामिनी, नवलभाम घनश्याम नवीन।
जै श्री राधा परम पावनी, कृष्ण पावन परम प्रवीन।।

जै श्री राधा सरस सोहनी, सोहन सरस कृष्ण रस राज।
जै श्री राधा मदन मोहनी, मोहन मदन कृष्ण रतिराज।।
जै श्री राधा रदन कुन्दिनी, कुन्द रदन श्री कृष्णानन्द।
जै श्री राधा प्रिया नन्दिनी, प्रिया सखी नन्दन रसकन्द।।११।।

वृन्दा ने सुरति रंग के श्रम में अलसाये सोते युगल को जगाने शुक-सारिका को आज्ञा की है।।११।।

दोहा

प्रात राश मिस हात लिय कंचन झारी प्यार।
मुख प्रक्षालन वसन पुनि निशि रस चिन्ह सह्मार।।१२।।

पद

श्रीललिता रस निशि चिन्ह सह्मारे।
मुख प्रक्षालन करि पोंछत लै वसन असन हित आनन्द भारे।।
हंसत परस्पर मुकुर दिखावत सहचरि मुसक्यावत प्रिया प्यारे।
कंचन झारी जमुना जल लै अप-अपने उत्साह विचारे।।
पीक गंड मंडल मधि सोहत अंजन अधर कंदूर निहारे।
आभूषन भूषन समुचित करि कच आवलि कवरी विस्तारे।।
श्रीप्रियासखी बहु विधि पिय प्यारी मंगल प्रात सुहात सिंगारे।।१२।।

प्रिया सखी मंजरी द्वारा प्रदत्त सुवासित जल से श्रीललिता जी ने युगलकिशोर का मुख प्रक्षालन व मांगलिक श्रृंगार किया है।।१२।।

दोहा

सहचरि राधा माधव हि हित करि वस्तु विधान।
लाई थार सह्मार अति मंगल भोग प्रधान।।१३।।

पद

श्रीराधा माधव हित लाई।
सहचरि निज निज कुंजन सों मिल थार सह्मार ललित ग्रह आई।।
प्रेम न वरनि जाति विवि उत्सुक मंगल उत्सव गति अधिकाई।
श्रीप्रियासखी प्रधान वस्तु कौ कर विधान सर्वस सचुपाई।।

करिके विविध श्रृंगार तिहारो मैं तो प्रेम पदारथ पवाऊं ।।१३।।

दोहा

विनय जुगलवर सौं करी सौंज समान सुभोग।
वितरहु सुख आसन लसहु हित मंगल आरोग।।

सखियों द्वारा युगल को मंगल भोग अर्पण

पद

जुगलधर आसन लसहु सुजोग।
प्रेम पदारथ दृष्टि निहारहु आनन्द सिन्धु प्रयोग।।
सामिग्री जो सोंज सम्हारी सो सुन्दरि आरोग।
श्रीप्रियासखी सुख वितरहु सब हितु सफल मंगला भोग।।१४।।

दोहा

पावत रसिक प्रसन्ना हिय प्रेम सहित परधान।
सकल जिमावत सहचरी हँसि हँसि रस सामान।।१५।।

पद

मुदित चित पावत प्यारी पीय।
प्रेम सहित कर कौर लेत् मिल है प्रसन्ना हिय वीय।।
सहचरि हंसि हंसि परसि जिमावत सद नव नीत सुधीय।
मधुर मधुर रस लेत मधुर गति उमंगि उमंगि पिय।।
श्री प्रिया सखी लखि वसी कामुहै तृपति न मानत जीय।।१५।।

सरस रसमय श्री राधाकुण्ड,
जहां कोयल करत किलोल।
नाचत मत्त मयूरन के झुण्ड,

अनन्त प्रेम सुधा सिन्धु श्री राधाकुण्ड में मध्यान्ह कालीन लीला की पीयूष धारा में अभिषिक्त साधकदास जन श्रीराधिका जी के कमल विनिन्दित पाद पद्म रत रहकर ध्यान में रहे जहाँ 'मदन सुखदा कुञ्ज' में ललिता विशाखादि सखियां युगल किशोर को एक एक मधुर हंसी हंसकर प्रेम से परिवेशन कर रही हैं, और राधामाधव एक-एक कौर प्रेम से आरोग रहे

हैं।।१५।।

दोहा

पाये प्रेम पदार्थ रुचि अनुपम परम विलास।
अचवन अचवत हूँ उमंगि उर में अधिक हुलास।।

पद

कुमर वर प्रेम पदारथ पाये।
निज निज रुचि अनुसार अनूपम सुन्दरि उर उमगाये।।
सव रस राशि रसिक रस भोगी अधर सुधा अचुवाये।।
श्रीप्रिया सखी के प्रान जीवन धन अधिक विनोद बढ़ाये।।१६।।

जो सुचतुर साधक यथा तथा रहकर भी सदा श्रीराधिका जी के दास्यामृत सिन्धु में सदा निमग्न रहते हैं। वे ही राधा सह सखियों द्वारा श्याम सुन्दर को प्रेम पदार्थों को पवाना व ललिता जी द्वारा ताम्बूलार्पणादि मधुर लीलाओं का चिन्तन सुख लेते हैं।

दोहा

पाय नागरी नागर हि लसे सिंहासन आय।
वीरी ललित लवंग लहि आरोगी अति भाय।।१७।।

पद

नागरी नागर उर रस पाय।
हंसे बसे हिय लसे सिंहासन मदन मनोहर आय।।
वीरी ललित लवंग राग एला लव लहि मुसिक्याय।
श्रीप्रिया सखी स्वामिनी श्याम जु आरोगी अतिभाय।।१७।।

दोहा

मन्मथ मन मथ मन मथ्यौ वंक विलोकन वाल।
नख रेखा लखि लाड़िली निज उर कर्तब लाल।।१८।।

पद

मथ्यौ मन मन्मथ मन्मथ वाल।
उर शंकर शिर पुंड लखी निज नखरेखा सु विशाल।।

हृदय जानि निश्चय करिकें जिह सुन्दर कर्तव वाल।
श्रीप्रियासखी पट अंचल कीनी वंक विलोकन हाल।।१८।।

दोहा

अरस परस हिय हरस दृग सरस करसरस प्रेम।
कियौ लाल मनभामतौ तोरि सब नेम।।१९।।

पद

मिले दोऊ सुन्दर मरकत हेम।
अरस परस हिय हरस दरस दृग प्रफुलित कीरति खेम।।
सरस सुधारस वरस करम करि हँसि हँसि प्यारी प्रेम।
श्रीप्रियासखी लालन मन भावन तोरि तीर सब नेम।।१९।।

दोहा

हंस हंसिनी ललित सर सोहत अधिक बिराज।
मिलि सहचरि वर रसिक सखि लाई आरति साज।।२०।।

पद

विलसत हंस हंसिनी प्यारे। ललिता कुंज प्रेम रस गारे।।
सोहत सौन मुक्तसर साजे। सिंहासन सुख अधिक विराजे।।
सहचरि मंगल वाद्य वजाये। मंगल गान विविधि विधि गाये।।
आरति मंगल रसिक रसीली। वारति मंगल माद नसीली।।
नाना भेद रंग उपजाये। मंगल ताल मृदंग सुझाये।।
मंगल परम नवेली जोरी। मंगल कृष्ण राधिका गोरी।।
मंगल सकल मनोरथ पाये। मंगल प्रियासखी अति भाये।।२०।।

हे मन! तू राधा, राधा पुकार प्यारे प्रिया-प्रियत्तम ललिताजी के कुञ्ज में प्रेमरस में सरावोर हो रहे हैं। अपने नयनों में गुरु कृपा रुपी प्रेमाश्न लगाकर तू राधाकुण्ड की ओर निहार जहां हंस हंसिनि के रुप में युगल विलास कर रहे हैं और सखियां मंगल वाद्य बजा रही हैं।

दोहा

भई मंगला आरती ललिता मंगल मुंज।
गलवाहीं दै जुगल मिल चले विशाखा कुंज।।२१।।

पद

चले मिल जुगल-विशाखा कुंज।
विनय पाय गलवांही दै संग सकल सहेली पुंज।।
बरसत पुष्प ढुरत चँवरे कर सरसत मधुकर गुंज।
हरसत प्रियासखी जै जै धुनि करसत मुनि मन कुंज।।२१।।

अहो विशाखा कुंज की अपूर्व शोभा हो रही है। जहां सखियों द्वारा पुष्प वर्षण, चाँवर डुलाये जा रहे हैं। सरस मधुकर गुंजन कर रहे हैं। हर्षाय के सखियां जय जय ध्वनि कर रही हैं।

दोहा

धोय जुगल पद कमल पुनि सिंहासन पधराय।
अव गाहन हित करि-विनय भई तैयारी जाय।।२२।।

पद

जुगल वर सिंहासन पधराये।
चरन कमल मकरन्द धोइ पुनि पुनि निज भाल लगाये।।
अवगाहन हित विनय करी अलि इच्छा पाय निधाये।
करि तैयारी प्रियासखी प्रिय प्यारी प्रेम बुलाये।।२२।।

श्रीकृष्ण के भी अति सुखकर एवं अद्‌भुत व माधुर्य प्रेम रस से पूर्ण हे श्रीराधाकुण्ड! तुम श्री कृष्ण को प्रेम रसोत्सव का उन्मद रस विशिष्ट विलासोत्सव प्रदान करने वाले हो। अहह कब मैं तुम्हारे सुहावने तट पर "मध्याह्न कालीन लीलाओं में" युगल राज का रत्न सिंहासन पर विराजना प्रियादि सखि मंजरियों को तुम्हारे प्रेम रसपूर्ण जल में अवगाहन के लिये विनय करते हुए देख पाऊँगा।

दोहा

चौकी रतन सुहाट की श्री राधा गोविन्द।
अवगाहे मिल चन्द छविवृन्द अमन्दानन्द।।
जैसी भोली राधारानी वैसो राधाकुण्ड है।
जैसो बाँको मेरो श्याम वैसो श्यामकुण्ड है।।

है कोयल की कुञ्ज यहाँ और मोरन को नृत्य है। राधाकुण्ड में जो करे स्नान, युगलप्रेम उसे कृष्ण करे दान।

पद

अवगाहे मिल श्री राधा गोविन्द।
चौकी रतन सुहाट की छवि गुप्त चन्द।।
सहचरि इच्छा अनुसरी सुन्दरिवर वृन्द।
कर उछटावत केलि करत जल परम अमन्दानन्द।।
मुख अनुराग राग भर वारी खेलत अति सुखकन्द।
श्रीप्रियासखी श्यामा सहचरि तिन धोवत पद अरविन्द।।२३।।

श्रीराधाकुण्ड के सुधासम जल में युगलकिशोर अवगाहन कर रहे हैं।

दोहा

न्हाय न्हवाये प्रेम सौं सब सहचरि समुदाय।
अप अपनी अभिलाष सौं प्यारी प्रीतम भाय।।

मध्यान्ह समय श्रीराधाकुण्ड में स्नान कर रहे हैं युगलकिशोर उनके चारों ओर सहचरि समुदाय अपनी-अपनी अभिलाषा से उन्हें अनुराग से रिझा रही हैं।

पद

प्रथम विवि प्रेम सरोवर-न्हाय।
पुनि अन्हवाये कालिन्दी रस सब सहचरि समुदाय।।
अप अपनी अभिलाष माधुरी प्यारी प्रीति बढ़ाय।
गुप्त कुंज पुंज रसरागी भाव भावना भाय।।
श्रीप्रियासखी अंग अंग विशाखा कर शाखा समुदाय।।२४।।

दोहा

सुधराई संग अंग की लखि लखि सखि वलि जात।
झीनें पट सौं पोंछिकें रस सिंगार डुवात।।

श्रीराधाकुण्ड पर अष्टसखियों द्वारा प्रिया प्रियतम का मधुर श्रृंगार हो रहा है प्रियाजी को नीलाम्बर धारण कराया है चूंकि श्रीकृष्ण नील वर्ण हैं श्रीश्यामसुन्दर को पीताम्बर चूंकि राधा पीत वर्णा हैं।

पद

लखि लखि अँग अँग की सुधराई। झीने पट पौंछे मन लाई।।
पीताम्बर नीलाम्बर राजे। सिंहासन रस राज विराजे।।
विथुरी मांग अलक कचकारे। विवि इच्छा अनुसार सह्मारे।।
आभूषण शोभा अधिकाई। भूषण अंग अंग दुति पाई।।
नख शिख लौं रस सिन्धु सुहाये। चन्दन चर्च मुकर मुखराये।।
भाव भरे गत आलस गाजे। श्रीप्रियासखी हिय कुंज विराजे।।२५।।

दोहा

भोग श्रृंगार सुहावने आरोगत मुसिक्याय।
माधुर माधुरी राधिका माधव सब विधि भाय।।

पद

सब विधि भाय राधिका माधव भोग श्रृंगार आरोगत सुन्दर।
कंचन कृत चौकी पर विलसित रतन जटित रस थार मध्य वर।।
पावत कवहु पवावत सहचरि कौर वनाय प्रेम सों निजु कर।
श्रीप्रियासखी हिये उत्कंठा बढ़त बढ़ावत विये परस्पर।।२६।।

विशाखानन्दद कुंज पर किशोरी किशोर द्वारा मध्यान्ह भोग सखियां युगल को निज कर से पा और पवा रही हैं। कैसी मधुर लीला है इस राधकुण्ड की।

दोहा

लै झारी अचवावहीं सहचरि मोद बढ़ाय।
दै कुंकुम को तिलक वर वीरी पान पवाय।।

पद

आली अचुवावत लै झारी।
निर्मल यमुना जल सौं अचवन करत मुदित है है पिय प्यारी।।
कर अँगौछ कुंकुम सु भालपर नीकौ टीकौ टीकौ सुषमाकारी।।
श्रीप्रिया सखी हित चित सौं वीरी देत विशाखा छिन छिन बारी।।२७।।

हे मेरे मन! तू इस अति सुमधुर ब्रजलीला में प्रवेश पाने के लिये श्रीराधिका जी की अति प्यारी सखि (विद्युत वर्णा) श्रीविशाखाजी के हेम कान्ति सम प्रकाशमान श्री चरणकमलों की शरण गह–

दोहा

छवि अपार श्रृंगार की आरति जय जय कार।
करत प्रेम परिवार मिल वार बार बलि हार।।

पद

श्रीराधिका माधव छवी अपार
करत प्रेम परिवार मिलीं अलि आरति रति श्रृंगार।।
वीना वेनु वाद्यवर विलसित गावत जय जय कार।
श्रीप्रियासखी तृनतोर जोर कर वार वार वलिहार।।२८।।

अहो! श्रीश्रीराधामाधव की अपूर्व रुप माधुरी के दर्शनानन्द से उल्लसित हृदया श्री ललिता विशाखादि सखियां युगल किशोर को आरति, रति और श्रृंगार कराते हुए वीणा, वेणु आदि वाद्य बना रही हैं। अहो कैसी अपूर्व शोभा हो रही है इस राधाकुण्ड धाम की।।२८।।

दोहा

चले विशाखा कुंज सौं कुंज करत विश्राम।
दिवस मध्य में राजहीं श्री चित्रा सखि धाम।।२९।।
कृष्ण मिले, हरषाय के, सखिया चँवर डुलाय।।

पद

चले रसिकवर पुलकित मनियाँ। कुंज कुंज पुंजन अंगनियाँ।।

एक रूप विलसित अधि कहिंयाँ। मेलत कण्ठ परस्पर वहियाँ।।
व्यजन चौर ढोरत सब सखियाँ। दरशन रूप रसीली अखियाँ।।

पिय प्यारी सुख सुखी हरखियाँ।
श्रीप्रियासखी नवलाल निरखियाँ।।२६।।

दोहा

वर विहार-विहरत परम रसिक बिहारीलाल।
रूप मंजरी आदि के हिय कौं करत निहाल।।

युगल रसिक वर चित्राजी के कुंज में शुभागमन,
रुप मंजरी द्वारा कुंज संवारना

पद

वर विहार सौं रसिक विहारी कुंज कुंज पग धारेंरी।
रूप मंजरी आदि मंजरी महल मनोज सुधारेंरी।।
केलि कलित कुंजन मंडल मधि सहचरि वृन्द निहारेंरी।
श्रीप्रियासखी हिय मंजु कुंज में गुंजन गुंज विहारेंरी।।३०।।

दोहा

अवलोकन धन केलि सौं पूरन कर अभिलाष।
आए चित्रा कुंज में चारु चरित परकाश।।

पद

अवलोकन धन केलि विहारी चित्राकुंज पधारे री।
पूरन कर अभिलाष विलासन चारु चरित्र जु धारेरी।।
भोजन भवन भामती नीके आदर रुचि अनुसारे री।
उत्कण्ठा इच्छा छवि छाजत सिंहासन बैठारे री।।
चाव-चौगुने सकल सहचरिन चित्रा कारज सारे री।
श्रीप्रियासखी अलौकिक शोभा राधामाधव प्यारे री।।३१।।

श्रीराधाकुण्ड के पूर्व (पद्म के पत्र सम) चित्रा सखी के कुंज में युगल के पधारने पर विचित्रकला निपुणा चित्राजी ने अति उत्कंठा से विविध भोजन पकवान पवाये। उस चित्रा कुंज की सेवा मुझे देकर श्रीचित्रासखी कब निहाल करेंगी।

दोहा

रतनजटित चौकी धरे विविध सौंज भर थार।
विनय पाय भोजन करत सुन्दर दोऊ सुकुमार।।

चित्रा सखि के यहाँ भोजन विलास

पद

भोजन करत जुगल सुकुमार।
रतन जटिल चौकी पर राजत विविध सौंज भरि थार।
विनय करत मिल सकल मंजरी पावहु प्राणाधार।।
भोज्य भक्ष्य पुनि लेह्य चोस्य रस अधर सुधा परवार।
प्रिया प्रेम धारा मय घूँघट मानत तृप्ति न सार।।
करहु किशोरी गोरी अनुभव अभिलाषा अनुसार।
कोटिन षट्रस वारों रसना विवि पीवन रस पार।।
श्रीप्रियासखी चित्रा अलिजू के धन्य भाग अवतार।।३२।।

दोहा

अचवन करत सुमुख कमल लै-लै सखिन समाज।
प्रेम सहित आरोग हीं वीरी आरति साज।।

युगल-आरती

पद

आरति वारति रति सौं आली। अचवन कर वीरी धर लाली।।
किए सकल मिल प्रेम समाजे। गान गान गति सौं अति साजे।।
चमर ढुरावत कोऊ अभिलाषी। व्यजन मोर छल रति सुख राशी।।
जै जै करत सर्व रस धारी। श्रीप्रिया सखी विवि वदन निहारी।।३३।।

दोहा

विलसे विवि वर आसने विनय करत सब बाल।
जै जै ध्वनि सौं आदि लै गुंजत कुंज विशाल।।
राधाकुण्ड तट पर, शुक सारिका करते मधुर रस गान।।

पद

जय जय कृष्ण कुमर वर सुन्दर, कुमरि किशोरी सुन्दरि राधा।
जय जय कृष्ण रसिक रस रासी, रसिकिन रासि रसीली राधा।।
जय जय कृष्ण सुधारस सागर, मधुर सुधारस सागरि राधा।
जय जय कृष्ण वदन शशि शोभा, पूरण चन्द्र वदन छवि राधा।।
जय जय कृष्ण कुंज लीलाधर, कुंज कुंज लीला मयी राधा।
जय जय कृष्ण छटा छवि सीमा छटा छवीली छवि श्री राधा।।
जय जय कृष्ण केलि कौतुक कुल सकल केलि कौतुक कुल राधा।
जय जय कृष्ण प्रिया सखि प्यारौ प्यारी प्रिया सखी श्री राधा।।३४।।

दोहा

लता कुंज चम्पकलता आवत देखे वीय।
श्रीचित्रा सखिकुंज सौं विनय भरे प्रिया पीय।।

चम्पकलता जी के कुंज में राधाकृष्ण आगमन और शयन

पद

श्रीचित्रा मन्दिर सौं राधा-माधव चम्पकलता कुंज पग धारे।
ललित लाड़ले लाल लाड़िली लाड़ भरे लोचन रतनारे।।
विनय पाय विलसे सुख शैया मध्य सैन मन मदन विहारे।
ललितादिक लखि लखि हरसित हिय चम्पकलता व्यजन करढारे।।
श्रीप्रिया सखी विलोकि वदन छवि अलसोंहे सोहत पीय प्यारे।।३५।।

दोहा

पौढ़े रस सागर जुगल मन मोहन अंग अंग।
सुखी करत सब सहचरिन विहरत शोभा संग।।

सखिप्राणधन

राधामाधव का चम्पकलता कुंज में विहार
'रे मन, तू चल डगर बुहार'

पद

मध्य कुंज पौढ़े रस सागर।
मन मोहन तन सुखी करन संग सखी प्रेम निधि नागर।।

विहरित शोभा संग अंगरँग कोटि अनंग सुखाकर।
रस बरसावत हिय हरसावत चितवत रसिक कलाधर।।
श्रीप्रियासखी मानस मधुकर दृग कमल मूँद सोये सुख आगर।।३६।।

दोहा

परम प्राण धन कुंज में करत विहार विशाल।
विहरहु आनँद सिन्धु विधु राधामाधव लाल।।

पद

प्रान धन राधा माधव लाल।
रस सागर आगर शोभा सुख रूप उजागर जाल।।
प्रेम परस्पर चारु चौगुने सहचरि संग रसाल।
नित्य नाम लीला मय जोरी रूप धाम सु विशाल।।
श्रीप्रियासखी हिय कुंज विहारिन आनन्द सिन्धु दयाल।।३७।।

हे बन्धु! श्रीराधा चरण कमलों के लावण्य लीला माधुर्य सागर में तुम अपने चित्त को अवगाहन करो तो कोटि-कोटि पाप नाश हो जायेंगे। इसके लिये श्रीराधाकुण्ड के दक्षिण में चम्पक कुसुम वर्णा श्री चम्पकलता की शरण लो, जो अत्यन्त प्रेम भरे हृदय से प्रिया प्रियतम को चमर डुलाते हुए रिझाती रहती हैं।।३७।।

दोहा

मंजुल मंगल अमल रस बरसत कुंज कुटीर।
हरसत हिय लालन जुगल शीतल मंद समीर।।३८।।

जय राधाकुण्ड धाम करत युगल विहार यहाँ।

पद

अमल रस जुगल बरसत मुदित है हिये।
रसलीला ललित लाड़िले सहचरी।
वृन्द, शोभा वलित कलित केली विये।।
उठत उनिदित क्षुधित पी सुधाधर मुदित।
मृदुल, हासा लसित ललित लावन्निाए।।

वरस रस कुंज सजि मंजु मंगल महा।
हरस, हँस धीर जू कुटीर वर धन्निाये।।
श्रीप्रिया सखि लखी आँख जुग मूंदिके।
राधिका माधव जोरि जुग वरनिये।।३८।।

दोहा

संध्या उत्थापन सजे मेवा ऋतु फल फाल।
लावत मिल कें भोग हित सकल सहेली वाल।।

युगकिशोर के लिये संध्या उत्थापन में विविध मेवा व ऋतुकाल के सुन्दर फल लायी हैं।

पद

संध्या उत्थापन जयमाल।
मुख धुवाय पहिराय सजाये जीवन दोऊ लाल।।
चौकी लाय धरे थारन भर मेवा फल रस फाल।
लावत मिल के ऋतु हित संध्या भोग सहेली बाल।।
रंग रंगीली रंगदेवी निज कुंज लखे प्रतिपाल।
श्रीप्रियासखी पावत प्रिया प्यारे सकल मंजरी जाल।।३९।।

दोहा

अचवन कर वीरी लियें आरोगे सुकुमार।
वारति आरति प्रेम सौं रंग रँगी बलिहार।।४०।।

पद

रंगीली रँगी रंग के सार।
अचवन अचुवाये वीरी हित आरोगन सुकुमार।।
संध्या आरति वारति हेली गावत गान अपार।
श्रीप्रिया सखी विय वदन विलोकत वार वार बलिहार।।४०।।

प्रेम रस रंग के सार श्रीराधाकुण्ड पर रंगीली सखियों ने श्रीललिता के ललित हस्त से बने पान को आचमन कराकर पान अर्पण किया युगल किशोर आरोगने लगे।

दोहा

प्रथुल प्रार्थना सौं चले भले सुदेवी द्वार।
अरघ सहचरी कौ लियें राजे लता अगार।।

प्रेम रंग रंगे युगल जब आये सुदेवी कुंज के द्वार भयो हिय उमंग अपार।

पद

प्रार्थना प्रथुल अनौंखे प्यार।
चहुँ दिश सेवा सखी वन्द में कमल कखणकाकार।।
भले वने भावी रंगराते चले सुदेवी द्वार।
अरघ देत शोभा सीमा कौं आवहु कहत दुलार।।
श्रीप्रिया सखी सुख आसन राजे जुगल लता आगार।।४१।।

दोहा

आवन मन भावन विये हेली भरी उछाह।
गाय सुदेवी सुन्दरी प्रवहत प्रेंम प्रवाह।।४२।।

पद

लेत नव कुंज नैन कौं लाह।
मन भावन आवन में हेलौ मान्यौ अधिक उछाह।।
गाय सुनाय रिझाय मनाये वचन विनोद सराह।
श्रीप्रिया सखी विय हिये सुदेवी सुन्दरि प्रेंम प्रवाह।।४२।।

दोहा

इच्छा भोजन पान रस पाये कुंज किलोल।
सुरभि वखतका आरती वारति अली अमोल।।४३।।

पद

करत विवि इच्छा भोजन डोल।
अली वृन्द मानस रुचि पूरत धारत कुंज किलोल।।
सुरभित धूपवखतका आरति बारति सहचरि गोल।
श्रीप्रिया सखी रस पान लालिमा फवी सुअधर अमोल।।४३।।

दोहा

केलि अनौखी करन हित चले लड़ीले लाल।
अली तुंगविद्या महल शम्पा श्यामतमाल।।
तुंगविद्या के कुंज में रसराज बने सखी रुप

पद

केलि अनौखी करन तुंगविद्या-ढ़िंग चले परम प्रिय प्यारी।
तिन उतकंठा सों पधराये कुंज विहारिन कुंज विहारी।।
लाल लड़ीले सोहत अद्‌भुत लली लाड़िली के शिरसारी।
श्रीप्रियासखी सुकुमार श्यामतन शम्पाशत शोभा सुकुमारी।।४४।।

दोहा

रसिक रसायन बन गये रास हेत सुकुमारि।
हंसत विहारिन लाड़िली बने नवल लखि नारि।।

और हुआ रास विलास।

पद

रास रस रसिक मोहन वने सामरी।
उदित उत्साह बल आलि मंडल विमल।
कमल दल कखणका कृष्ण छवि भामरी।।
चरन वर धरन मन हरन गन्धर्व गन।
शरन रन सुरन जन प्रान धन धामरी।
करन की परन मन उठन अंसन नमन,
गमन सम मृगनृपन विपिन विधु वामरी।।
हँसत अति प्रीति जब सर्व मन हरव नव,
श्रीप्रिया सखि परव मधुर धव नामरी।।४५।।

दोहा

रास विहार विनोद कर रसिक विहारी लाल।
गये इन्दुलेखा महल पाय सुधा रसपाल।।

पद

रसिकवर रास विहारीलाल।

गये इन्दुलेखा की रेखा महल विनोद विशाल।।
पाय तुंगविद्या विरचित चित चाव समान रसाल।
पधराये दै अरव सुखासन गल पहराई माल।।
श्रीप्रिया सखी व्यारू हित कीनी तैयारी तत्काल।।४६।।

अहो! गौड़ीय वैष्णवों का तो एकमात्र जीवन मरण और ध्यान का स्थान श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु द्वारा कलिकाल के जीवों के हितार्थ (युगल लीला स्थान को) पुनः प्रकटित यह श्रीराधा-कुण्ड धाम ही है, जहां तुंगविद्या और इन्दुलेखादि सखियों द्वारा युगलराज को सुवासित मालाएं धारण, हार, श्रृंगार व षट् रस व्यश्न परिवेशन आदि मधुर लीलाएं चल रही हैं।

दोहा

व्यारू करत प्रसन्ना चित गोरी नवल किशोर।
देत परस्पर कौर कर घूँटत सुधा अथोर।।४७।।

पद

व्यारू करत नवल किशोर।
रूप रस सौं पगे पावत वस्तु वृन्द अथोर।।
प्रेम रस सोई सुधा धारा घूंटत प्रिय चितचोर।।
परस्पर दे हाव भावन कौर तृपित न थोर।।
अलि विचित्र कटाक्ष कक्षा षट्रस वारि करोर।।
श्रीप्रियासखी प्रसन्ना व्याहुल हेतु ग्रन्थी जोर।।४७।।

दोहा

अचवन अचवावत अली बना वनीकौं संग।
हँसत कहत सब होयगौ आजु व्याहुलौ रंग।।४८।।

पद

अचवन अचवावत समहेली शुद्ध कुंज ।
मंजुल रस ढारत झारी कनक वदन अलिवेली।
हिय अनुराग राग रस सुरचित एला लौंग सुकेली।।
हँसत कहत सब होय व्याहुलौं रंग सुरति रसरेली।
श्रीप्रियासखी टेहुलौ करिहै बना बनी मन मेली।।४८।।

अब आचमन और ताम्बुलार्पण सेवन।

दोहा

आजु इन्दुलेखा लखीं आवत जूथ अली।
राधा माधव व्याहुलौ सुन श्रीचन्द्र गली।।

किशोरी मोपे इतनी कृपा कीजो।
मेरो जग जंजाल छुडाय ध्यान तव लीला को दिजो।।

सखियों द्वारा युगल विवाह महोत्सव

पद

आजु इन्दुलेखा निजु मन्दिर आवत जूथ लखे अलियन के।
सघन घटा ज्यौं सूर्यशशी मग त्यौं घिर रहे मार्ग गलियन के।।
कोऊ हार विहारिन हित लै कोऊ सेहरे लै कलियन के।
विविध पान पकवान मिठाई डगर वटत मंगल डलियन के।।
श्रीप्रिया सखी सुख सजे राधिका माधव धार हार लड़ियन के।।४६।।

दोहा

मंडप में विलसें जुगल भावुक भामर भाम।
भयौ व्याहुलौ प्रेंम मय कुंज महल अभिराम।।

पद

मंडप बैठे दुलहिन दुलहु।
जुगल किशोर किशोरी जोरी रूप वयस सम तूलहु।।
भावुक भामर भाम धाम श्री कालिन्दी के कूल हू।।
भयौ व्याहुलौ चन्द्र महल में राधा माधव फूलहु।।५०।।

दोहा

आरति आली वृन्द मिल वारति सारति सैन।
धारति गौनौ टेहुलौ लखि अलसोंहैं नैन।।

युगल आरती

पद

घृत कपूर वर्तिका आरती वारति आली वृन्द सैन की।

करत टेहुलो गौने को पुनि मुद्रा लखि अलसौंहे नैन की।।
सुन्दर वदन विलोकि दम्पती सुख सम्पति सीमा सुरैन की।
श्रीप्रियासखी जु लाड़ लड़ाई मूरति मूरति कोटि मैन की।।५१।।

दोहा

गावत मन भावत विये गुन गभीर रस धीर।
कीर कोकिला वीरवर बोलत कुंज कुटीर।।

और मधुर गान।

पद

गावत मन भावन गुन गंभीर।
राग स्वर मृदंग मंजरी बोल अमोल सुधीर।।
गावत सकल मंजरी संग मिल वोलत कोकिल कीर।।
आजु अनूपम छवि दम्पति की कहा कहौं री वीर।।
श्रीप्रियासखी गन्धर्व तुच्छ कर गाती कुंज कुटीर।।५२।।

दोहा

सवन कियौ वहु रंग नयौ शयन समय हिय जान।
पौढ़े श्यामा श्याम मिल जीवन ज्योति प्रधान।।

सखियों द्वारा श्रीश्रीराधामाधव को
रत्न पलंग पर शयन कराना

पद

सवन मिल कीयौ रंग नयौ।
सेज समार बिछाई सुख सौं जान सैन समयौ।।
पौढ़े श्री राधा माधव कौ अविरल संग भयौ।
श्रीप्रिया सखी प्रधान जोती जीवन दृगन लयौ।।५३।।
खंजन गंजन के दृगन अंजन कंजन सार।
श्रीचित्रा चित में दित ललिता केलि निहार।।

पद

दृगन मन खंजन अंजन सार।
गंजन करन मीन मृग चंचल अंचल ओट विहार।।

कंजन सौं मंजुल अंगुलि दल अकवत वारंवार।।
श्री चित्राजू मुदित चित्त में ललिता केलि निहार।।
श्रीप्रियासखी हिय भरत हिलोरे करत वदन वलिहार।।५४।।

दोहा

धन्य धन्य वृन्दावनी लता ललित विस्तार।
धन्य राधिका माधवी मूरति धन्य विहार।।

पद

धन्य श्री वृन्दावन सुख धाम।
ललित लता विस्तार धन्य पुनि मोहन मदन विराम।।
धन्य राधिका माधव मूरति कोटि काम अभिराम।
श्रीप्रिया सखी "चन्द्र" "राधा" प्रभु धन्य नाम विश्राम।।५५।।

श्रीराधामाधव चन्द्रगोपाल, श्रीवृन्दावन नित्यरसाल।

।।इति श्रीमन्माध्वगौडेश्वराचार्य श्रीचन्द्रगोपाल गोस्वामी प्रभु
पुत्र श्रीराधा गोपाल गोस्वामि सुपुत्र श्रीब्रह्मगोपाल प्रभु (प्रिया सखी)
प्रणीता श्रीहरिलीला समाप्तिमगात्।।

जो श्रीराधापद पंकज सुधारस में निमग्न हैं, और श्रीराधाजी के भी चरण कमलों की सेवा ही जीवन का उद्देश्य बना लिये हैं, उन्हें तो श्रीराधिका जी की रंगीली सखी रंगदेवी के पद्म किंजल्क की सी शोभा वाले श्री चरणों को मन में रमाने के लिये श्रीराधाकुण्ड के नैऋत्व दल में श्री रंगदेवी को पुकार जो प्रियाजी को यावत्, अल्ता पहनाकर उनका सदा सुख विधान करती हैं।